

वर्तमान में भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्रणाली: विश्वेषनात्मक अध्ययन

हिमजा पांडे¹, डॉ. अंशुमन शर्मा (सहायक प्रोफेसर)²
संगीत विभाग

^{1,2} सनराइज यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान

शोध सारांश-

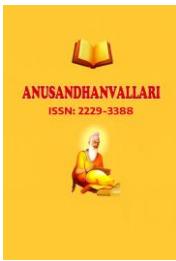
मनुष्य का स्वभाव सदा ही परिवर्तनशील रहा है। मानवी विकास के अन्तर्गत मनुष्य दिन-प्रतिदिन कुछ नवीन करने और खोजने में रुचित रहता है। कलायों में भी इस प्रकार का परिवर्तन आता रहा है। अगर संगीत कला की बात की जाए तो इसका मनुष्य के साथ गहरा सम्बन्ध है। वैदिक युग से लेकर वर्तमान युग तक संगीत शिक्षा में भी निरंतर परिवर्तन होते आ रहे हैं। प्राचीन काल में संगीत शिष्य केवल कुछ वर्गों तक ही सीमित था और तो को संगीत सिखने की अनुमति नहीं थी। संगीत शिक्षा हेतु लोगों के गुरुकुल में जाकर संगीतक गुरु के पास गुरुकुल में कई वर्षों तक रहना पड़ता था। गुरु जी पूर्ण दृढ़ता और मेहनत करने वाले शास्त्रों को ही संगीत की शिक्षा देते थे। उस समय गुरु मुख्य प्ररंपरा ही प्रचलित थी। शिक्षक द्वारा कोई प्रश्न पूछा जाना गुरु का अपमान समझा जाता था। समय के अन्तराल से 'घराना पद्धति' का जन्म हुआ, इसके अन्तर्गत अलग-अलग घरानों के उस्ताद कलाकार अपने शिक्षकों को अपने घराने की अलग-अलग खूबियों से अवगत करवाते थे, तांकि उस घराने का संगीतक प्रचार पूर्ण रूप से हो सके। लेकिन स्वतंत्रता के बाद संगीत शिक्षण में इतना परिवर्तन आया है कि पिछले 50 वर्षों में इतना नहीं हुआ। आज अलग-अलग संचार माध्यमों, प्रिन्ट मीडिया, सोशल मीडिया, इंटरनेट, टी.वी. और दूरदर्शन के माध्यम से संगीत शिक्षण बिलकुल आसान हो गया है। संगीत को एक मुख्य और चपल विष्य के रूप में स्नातकोर से लेकर विश्वविद्यालयों तक के पाठ्यकर्म में शामिल कर दिया गया है। संगीत के क्षेत्र में निरन्तर शोध कार्य हो रहे हैं। शिष्य की भिन्न-भिन्न पद्धतियों को प्रयोग में लाया जा रहा है। अगर पूर्ण रूप से अवलोकन किया जाए तो 21वीं सदी का यह समय यहाँ संगीत शिक्षण में एक महत्वपूर्ण कार्य निभा रहा है, वहीं दूसरी ओर संगीत केवल रोजगार का विष्य बनकर रह गया है। कलाकारों और उच्च कोटि के उस्तादों ने अपने आप को एक सीमित श्रेत्र में ही बाँध लिया है। आज के वर्तमान युग में संगीत शिक्षण का उद्देश्य केवल मंच प्रस्तुति और धन संम्पत्ति तक सीमित हो गया है। अगर संगीत की इस अमुलय धरोहर को बचाना है तो हमें इन सभी कमियों का त्याग करना होगा तांकि संगीत शिक्षण और उचाईयों को छू सके।

शब्द कुंजी:- संगीत शिक्षण, विद्यालय वर्तमान, शिक्षक, शिक्षा इत्यादि।

पृष्ठभूमि:-

शिक्षा का स्वरूप किसी भी राष्ट्र की विकास प्रक्रिया का अनुठा अंग होता है, जिस से उस की प्रष्ठभूमि में उस देश की कला, संस्कृति, धर्म, साहित्य आदि की चर्चा होती है। भारत देश एक ऐसा देश है जिसकी संस्कृति में 'एकता में अनेकता' समाई हुई है। भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे महान और प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। शिक्षा एक ऐसा पहलू है, जो किसी भी देश की संस्कृति के साथ होना अनिवार्य है। शिक्षण के बिना कोई भी प्राणी अपने आप में पूर्ण नहीं माना जा सकता। शिक्षा के साथ हमारे बौद्धिक ज्ञान और व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि होती है।

जब हमारा राष्ट्र स्वतंत्र हुआ था तो इसका प्रभाव समाज के सभी क्षेत्रों पर पूर्ण रूप से पड़ा। इस परिवर्तन के दौर से भारतीय समाज का कोई भी पहलू अछूता ना रहा। स्वतंत्र होने के पश्चात शिक्षण एक ऐसा पहलू था, जो उस समय सबसे नीचले स्तर पर था। इसकी वजह से ही ब्रिटिश सामराज्य ने भारत पर 100 सालों तक अपनी धौंस जमाकर रखी। इसलिए स्वतंत्रा उपरांत ये भारतीय विचारकों के लिए प्रथम समस्या थी कि भारतीय शिक्षण के स्तर को किस तरह उच्च स्तर पर पहुँचाया जाए। इस समस्या का हल करने के लिए हमारे विचारकों ने समय-समय पर इस विषय पर अपने शोध कार्य आरंभ किया। भारतीय संस्कृति में संगीत और संगीत शिक्षा दोनों ही विष्य विशेष रूप से अनिवार्य माने जाते हैं। अनेक प्रयोगों के बाद यह सिद्ध हुआ है कि संगीत का क्रियात्मक पर्याप्त भी उतना ही अनिवार्य है जितना शास्त्र पर्याप्त। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भारत में अलग-अलग स्थानों



पर शिषण केन्द्र स्थापित किए गए। प्राचीन काल में यहां संगीत का शिक्षण गुरुकुल में दिया जाता था, वहीं यह वर्तमान काल से शिक्षण संस्थानों द्वारा किया जा रहा है। लेकिन संगीत की शिक्षा प्रणाली में उस तरह की बढ़त नहीं देखने को मिल रही जिस तरह की अन्य विषयों में हो रही है।

जैसे कि हम सभी जानते हैं कि प्राचीन काल में संगीत का शिक्षण गुरु शिष्य परंपरा द्वारा दिया जाता था, वहीं यह मध्य काल में 'घराना परंपरा' से होने लगा, और काल अन्तर में यह संगीत शिक्षण संस्थागत शिक्षण प्रणाली के माध्यम से प्रचलित हो रहा है।

शोध की आवश्यकता एवं उद्देश्य

भारतीय शास्त्रीय संगीत को संरक्षित और प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षा प्रणाली में आवश्यक सुधारों को समझना आवश्यक है। इस शोध के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- भारतीय शास्त्रीय संगीत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली का अध्ययन करना।
- पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण विधियों का तुलनात्मक विश्लेषण।
- वर्तमान में शिक्षा प्रणाली से जुड़ी चुनौतियों को पहचानना।
- शिक्षा प्रणाली में आवश्यक सुधारों के लिए सुझाव देना।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का विश्लेषण

वर्तमान में भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्रणाली को तीन मुख्य श्रेणियों में बाँटा जा सकता है:

गुरु-शिष्य परंपरा: यह विधि अब भी कई स्थानों पर जारी है, विशेषकर पारंपरिक घरानों में। इसमें व्यक्तिगत ध्यान और गहन अभ्यास की प्रमुखता होती है। समय के साथ गुरु-शिष्य परंपरा में कई बदलाव हुए हैं। आज यह परंपरा निम्नलिखित रूपों में देखी जा सकती है:

- **परंपरागत शिक्षण (गुरु के आश्रम/घर पर प्रशिक्षण)**- अब भी कई प्रसिद्ध कलाकार अपने शिष्यों को व्यक्तिगत रूप से सिखाते हैं, जैसे कि पंडित जसराज, उस्ताद राशिद खान, और डॉ. अश्विनी भिड़े देशपांडे जैसे दिग्जे कलाकारों ने किया है। यह प्रणाली छोटे समूहों में या व्यक्तिगत रूप से होती है, जिससे गुरु पूर्ण ध्यान देकर शिष्य को प्रशिक्षित कर सकते हैं।
- **विश्वविद्यालयों और संगीत संस्थानों में शिक्षा-** बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, भातखंडे संगीत संस्थान, गंधर्व महाविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा को आधुनिक शिक्षा पद्धति के साथ जोड़ा गया है। यहाँ शिक्षक (गुरु) व्यावहारिक और सैद्धांतिक दोनों रूपों में छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।
- **ऑनलाइन गुरु-शिष्य परंपरा-** डिजिटल युग में ऑनलाइन प्लेटफार्मों (यूट्यूब, स्काइप, ज्ञूम, और अन्य संगीत ऐप्स) के माध्यम से संगीत शिक्षा देना एक नया चलन बन गया है।
- **कई प्रसिद्ध कलाकार अब ऑनलाइन कक्षाएँ संचालित कर रहे हैं,** जिससे दुनिया भर के विद्यार्थी संगीत सीख सकते हैं।
- **हालांकि,** यह तरीका पारंपरिक गुरु-शिष्य संबंध के आत्मीय जुड़ाव और अनुशासन को पूरी तरह से नहीं दर्शा सकता।

वर्कशॉप और मास्टरक्लास के माध्यम से शिक्षा

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यावहारिक अनुभव, विशेषज्ञों से मार्गदर्शन, और कौशल विकास पर भी आधारित होता है। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के साथ-साथ आधुनिक समय में वर्कशॉप (कार्यशालाएँ) और मास्टरक्लास जैसी शिक्षण विधियाँ अत्यधिक लोकप्रिय हो गई हैं। ये विधियाँ विशेष रूप से उन छात्रों और पेशेवरों के लिए उपयोगी हैं, जो किसी विशिष्ट क्षेत्र में गहन ज्ञान और अभ्यास प्राप्त करना चाहते हैं। वर्कशॉप और मास्टरक्लास का महत्व केवल संगीत या कला के क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है, बल्कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, और अन्य शैक्षणिक विषयों में भी इनका व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है।

संस्थान आधारित शिक्षा: विभिन्न विश्वविद्यालयों और संगीत अकादमियों जैसे - प्रयाग संगीत समिति, भातखंडे संगीत विद्यापीठ, एवं गंधर्व महाविद्यालय में शास्त्रीय संगीत की शिक्षा दी जाती है। शिक्षा किसी भी समाज के विकास की नींव होती है। यह ज्ञान, कौशल और संस्कारों के संचरण का माध्यम है। शिक्षा की कई प्रणालियाँ प्रचलित हैं, जिनमें से संस्थान आधारित शिक्षा एक महत्वपूर्ण प्रणाली है। यह पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा से विकसित होकर आधुनिक समय में विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों के रूप में कार्य कर रही है। संस्थान आधारित शिक्षा एक संरचित और संगठित प्रणाली है, जिसमें छात्रों को निर्धारित पाठ्यक्रम, अनुशासन और शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है। यह शिक्षा प्रणाली प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक विस्तारित होती है और विभिन्न विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती है।

संस्थान आधारित शिक्षा की विशेषताएँ

- संरचित पाठ्यक्रम – शिक्षण संस्थानों में एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम होता है, जो शिक्षा नीति और मानकों के अनुसार निर्धारित किया जाता है।
- विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा मार्गदर्शन – शिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षित और योग्य शिक्षकों के मार्गदर्शन में छात्रों को शिक्षित किया जाता है।
- व्यावहारिक और सैद्धांतिक ज्ञान का संतुलन – संस्थान केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं, बल्कि प्रयोगशालाओं, प्रोजेक्ट्स और इंटर्नशिप के माध्यम से व्यावहारिक शिक्षा भी प्रदान करते हैं।
- डिग्री और प्रमाणपत्र की मान्यता – संस्थानों से प्राप्त डिग्री और प्रमाणपत्रों को व्यावसायिक और सामाजिक स्तर पर मान्यता प्राप्त होती है।
- अनुशासन और समयबद्धता – संस्थान आधारित शिक्षा प्रणाली में नियमित कक्षाएँ, समयबद्ध परीक्षाएँ और अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ शामिल होती हैं, जिससे अनुशासन और समय प्रबंधन का विकास होता है।

ऑनलाइन और डिजिटल प्लेटफॉर्म: वर्तमान समय में ऑनलाइन कक्षाओं और वीडियो ट्रूटोरियल्स के माध्यम से संगीत सीखने की प्रवृत्ति बढ़ी है। तकनीकी प्रगति ने हमारे जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है, विशेष रूप से शिक्षा, व्यवसाय, और संचार के क्षेत्र में ऑनलाइन और डिजिटल प्लेटफॉर्म एक क्रांतिकारी बदलाव लेकर आए हैं। इंटरनेट के प्रसार और डिजिटल तकनीकों के विकास ने लोगों को शिक्षा, व्यापार, मनोरंजन, और सामाजिक संपर्क के नए साधन प्रदान किए हैं। आज के समय में, डिजिटल प्लेटफॉर्म केवल सूचना प्राप्त करने के साधन नहीं रह गए हैं, बल्कि वे सीखने, व्यवसाय करने, सामाजिक जुड़ाव, और उत्पादकता बढ़ाने के प्रभावी माध्यम बन गए हैं। ऑनलाइन और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने हमारे जीवन को आसान और अधिक सुविधाजनक बना दिया है। शिक्षा, व्यवसाय, मनोरंजन और संचार के क्षेत्र में इनका प्रभावी उपयोग हो रहा है। हालाँकि, साइबर सुरक्षा, डिजिटल डिवाइड, और गोपनीयता जैसी कुछ चुनौतियाँ बनी हुई हैं, लेकिन सही नीतियों और तकनीकी नवाचारों के माध्यम से इनका समाधान किया जा सकता है। भविष्य में, डिजिटल प्लेटफॉर्म और अधिक उन्नत, सुरक्षित और समावेशी बनेंगे, जिससे यह समाज के सभी वर्गों के लिए अधिक लाभदायक सिद्ध होंगे।

भारतीय शास्त्रीय संगीत शिक्षा की उपयोगिता

संस्कृति और परंपरा का संरक्षण

भारतीय शास्त्रीय संगीत हमारी सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग है। शिक्षा प्रणाली के माध्यम से यह संगीत पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ रहा है, जिससे भारत की समृद्ध संगीत परंपरा संरक्षित हो रही है।

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव

भारतीय शास्त्रीय संगीत का अभ्यास करने से मानसिक शांति और एकाग्रता बढ़ती है। अनुसंधानों से पता चला है कि राग चिकित्सा (म्यूजिक थेरेपी) तनाव, अवसाद और अन्य मानसिक समस्याओं के इलाज में सहायक हो सकती है।

करियर और रोजगार के अवसर

आधुनिक समय में संगीत की शिक्षा केवल कलाकारों तक सीमित नहीं है। संगीत शिक्षक, संगीत निर्देशक, साउंड इंजीनियर, संगीत थेरेपिस्ट, और ऑनलाइन कंटेंट क्रिएटर जैसे कई नए करियर विकल्प उपलब्ध हैं।

ग्लोबल प्लेटफार्म पर भारतीय संगीत की पहचान

डिजिटल युग में भारतीय शास्त्रीय संगीत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हो रहा है। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के कारण विदेशी छात्र भी इस संगीत को सीखने में रुचि ले रहे हैं।

संवेगात्मक और आत्मअनुशासन का विकास

संगीत शिक्षा आत्मअनुशासन, धैर्य, और संवेदनशीलता को बढ़ावा देती है। इससे छात्रों में आत्मविश्वास और रचनात्मकता का विकास होता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत शिक्षा की चुनौतियाँ

गुरु-शिष्य परंपरा का हास: पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा कमजोर पड़ रही है, जिससे संगीत की गहराई और विशुद्धता पर असर पड़ रहा है।

संस्थानिक शिक्षा में व्यावहारिक प्रशिक्षण की कमी: कई विश्वविद्यालयों में संगीत की शिक्षा सैद्धांतिक अधिक और व्यावहारिक कम होती है।

संगीत शिक्षकों की कमी: प्रशिक्षित और अनुभवी शिक्षकों की संख्या सीमित है, जिससे उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा नहीं मिल पा रही।

तकनीकी और डिजिटल बदलावों के साथ तालमेल: ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली संगीत की सूक्ष्मताओं को सिखाने में प्रभावी नहीं हो पाती।

नौकरी और करियर के अवसरों की अनिश्चितता: शास्त्रीय संगीत में करियर बनाना चुनौतीपूर्ण है, जिससे युवा प्रतिभाएँ इससे विमुख हो रही हैं।

शिक्षा प्रणाली में सुधार के सुझाव

गुरु-शिष्य परंपरा का पुनरुद्धार: संगीत की गहरी समझ और अभ्यास के लिए व्यक्तिगत प्रशिक्षण को बढ़ावा देना आवश्यक है।

संस्थानिक शिक्षा को अधिक व्यावहारिक बनाना: छात्रों को मंच प्रदर्शन, वर्कशॉप, और इंटरेक्टिव तकनीकों को अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए।

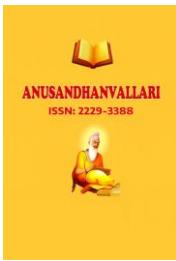
संगीत शिक्षकों का प्रशिक्षण: उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षकों के निर्माण के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

डिजिटल प्लेटफार्म का प्रभावी उपयोग: ऑनलाइन शिक्षण में लाइव सत्रों और इंटरेक्टिव तकनीकों को अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए।

संगीत को रोजगार से जोड़ना: संगीत के करियर के नए अवसरों को बढ़ावा देने के लिए सरकारी और निजी संगठनों को अधिक सहयोग करना चाहिए।

निष्कर्ष

भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है ताकि यह बदलते समय के साथ प्रासंगिक बनी रहे। पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण विधियों के बीच संतुलन बनाकर, शिक्षकों के प्रशिक्षण को मजबूत कर, और डिजिटल तकनीकों का सही उपयोग करके भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।



Anusandhanvallari

Vol 2024, No.1

April 2024

ISSN 2229-3388

सन्दर्भ-सूची-

- [1] आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, नीलम बाला महेन्द्र, कनिष्ठ पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स 4697/5-21, ए-अंसारी रोड, दरियांगंज, नई दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण-2011
- [2] अंतर्नाद सुर और साज. प. विजयशंकर मिश्र, कनिष्ठ पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स 4697/5-211, अंसारी रोड, दरियांगंज नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण 2004
- [3] उत्तरी भारत में संगीत शिक्षा, तृप्ति कपूर सम्पादक मंजीत हरमन पब्लिशिंग हाउस ए-23, नारायणा इन्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1998
- [4] भारतीय संगीत और संगीतज्ञ, रामलाल माधु, बोहरा प्रकाशन चौड़ा रास्ता, जयपुर, प्रथम संस्करण 1997